Day

JULY MONTH

पाठ : क्या लिखूँ
पद्य : राम - परशुराम - लक्ष्मण संवाद
व्याकरण : * शब्द भंडार - समानार्थी शब्द

* विराम चिह्न

लेखन कौशल: संवेदन पत्र

२

30

Day .....

क्या लिखूँ

मेरी समझ मेरे विचार

1. निबंध लेखन के विषय में ए. जी. गार्डिनर और लेखक के विचारों में क्या अंतर है?

उ० ए. जी. गार्डिनर का मानना है कि निबंध लिखने के लिए एक विशेष मानसिक आवेग या भीतरी उत्साह होना चाहिए। उनके अनुसार विषय कोई भी हो, यदि मन में भाव है, तो निबंध लिखा जा सकता है। कभी-कभी विषय इतने कठिन या विपरीत होते हैं कि भीतरी उत्साह होने के बावजूद सामग्री और समय के अभाव में आदर्श निबंध लिखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। गार्डिनर भाव को प्रधानता देते हैं, जबकि लेखक 'विषय की प्रकृति' और परिस्थितियों को भी महत्वपूर्ण मानते हैं।

2. लेखक के अनुसार वृद्ध और तरुण दोनों ही वर्तमान से असंतुष्ट रहते हैं, पर दोनों की असंतुष्टि के कारण भिन्न हैं। आपके विचार से उनकी असंतुष्टि के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

उ० वृद्धों की असंतुष्टि : वृद्धों को अपना 'अतीत' गौरवशाली और सुखद लगता है। वे वर्तमान के परिवर्तनों को स्वीकार नहीं कर पाते और पुराने मूल्यों को खोता देख दुखी होते हैं। उनके लिए 'बीता हुआ समय' ही श्रेष्ठ था।

तरुणों (युवाओं) की असंतुष्टि : युवाओं को अपना 'भविष्य' सुनहरा दिखाई देता है। वे वर्तमान की

रूढ़ियों और बाधाओं को तोड़कर जल्द से जल्द अपने सपनों के भविष्य में पहुँचना चाहते हैं। वर्तमान की धीमी गति उन्हें बेचैन करती है।

3. नमिता और अमिता किन विषयों पर निबंध लिखवाना चाहती हैं? उनके द्वारा सुझाए गए विषयों पर निबंध लिखने में लेखक को क्या-क्या कठिनाइयाँ आई?

उ० नमिता 'समाज-सुधार' पर और अमिता 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' विषय पर निबंध लिखवाना चाहती हैं।

लेखक को हुई कठिनाइयाँ

* समय का अभाव : उन्हें बहुत कम समय में दो अलग-अलग विषयों पर लिखना था।

* सामग्री की कमी : 'समाज सुधार' जैसे गंभीर विषय के लिए, उनके पास न तो कोई पुस्तकालय था, न ही आँकड़े।

* विरोधाभास : 'दूर के ढोल सुहावने' एक मुहावरा है, जिसे सीमित शब्दों में स्पष्ट करना और उसे 'आदर्श' बनाना कठिन था।

4. निबंधशास्त्र के आचार्यों ने आदर्श निबंध लिखने की कौन सी युक्तियाँ सुझाई हैं? आप किसी भी विषय पर निबंध लिखने से पहले किस तरह की तैयारी करते हैं?

उ०: निबंध शास्त्र के आचार्यों के अनुसार आदर्श निबंध लिखने के लिए —

Day .....

* निबंध संक्षिप्त, स्पष्ट और प्रभावी होना चाहिए।
* उसमे सामग्री और शैली दोनो का संतुलन होना चाहिए।
* विषय से संबंधित उचित सामग्री एकत्र करनी चाहिए।
* लिखने से पहले रूपरेखा बनानी चाहिए।
* निबंध में एकता और क्रमबद्धता होनी चाहिए।

निबंध लिखने से पहले मेरी तैयारी —

* सबसे पहले विषय को ध्यान से समझना।
* संबंधित बिंदु लिखना।
* अपने विचार और अनुभव सोचना।
* भूमिका, मुख्य भाग और निष्कर्ष बाँटना।
* त्रुटियों का सुधारना।

5. मानटेन ने "जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया।" निबंध लेखन के लिए देखने, सुनने और अनुभव करने की क्या उपयोगिता हो सकती है?

उ० मानटेन का मानना था कि जो कुछ स्वयं देखा, सुना या भोगा है, वही सच्चा साहित्य है। निबंध लेखन में इसकी उपयोगिता यह है —

* मौलिकता : जब हम अपने अनुभव लिखते हैं, तो वे किसी की नकल नहीं होते।

* सजीवता : अनुभव से लिखा गया निबंध हृदय को छूता है, क्योंकि उसमें सच्चाई है।

* आत्मपरक शैली : देखने और सुनने से हमारे पास विचारों का भंडार होता है, जो रोचक बन जाता है।

राम - परशुराम - लक्ष्मण संवाद

मेरी समझ मेरे विचार

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. "अरथ निमेष ..... और क्यों?

उ० - इस पंक्ति का अर्थ है आधा पल भी एक कल्प (करोड़ों वर्षों के युग) के समान भारी और लंबा प्रतीत हो रहा है। यह पंक्ति सीताजी के संदर्भ में कही गई है।

*कारण : शिव -धनुष टूटने के बाद जब परशुराम अत्यंत क्रोधित होकर सभा में आए और सबको धमकाने लगे, तो सीताजी अपने विवाह और भविष्य को लेकर अत्यंत चिंतित और भयभीत हो गई। उनके मन में आशंका थी कि मुनि का यह क्रोध कहीं इस मांगलिक कार्य में विघ्न न डाल दे, इसी मानसिक व्यथा के कारण उन्हें समय की गति अत्यंत धीमी लग रही थी।

2. "सो बिलगाउ बिहाइ समाजा ..... उत्तर दीजिए।

उ० - परशुराम की चेतावनी का राज - समाज पर प्रभाव —

* प्रभाव : परशुराम की चेतावनी - "जिसने धनुष तोड़ा है वह समाज से अलग हो जाए, नहीं तो सभी राजा मारे जाएंगे" — का पूरी सभा पर आतंक और भय का प्रभाव पड़ा।

Day .....

★ तर्क :

• सभी उपस्थित राजा भय के मारे व्याकुल हो गए और डरते हुए अपना और अपने पिता का नाम लेकर परशुराम को दंडवत प्रणाम करने लगे।

• राजाओं को इतने भयभीत थे कि वे परशुराम के प्रश्नों का उत्तर तक नहीं दे पा रहे थे।

• पूरी सभा "हाहाकर" करने लगी क्योंकि वे जानते थे कि परशुराम का क्रोध प्रलयंकारी है।

3. तुलसीदास ने राम और ..... प्रस्तुत कीजिए।

उ० परशुराम जैसे क्रोधी व्यक्ति को शांत करने के लिए राम का 'विनय' का मार्ग अधिक उचित और व्यवहारिक है।

कारण और तर्क

★ राम का मार्ग : राम ने स्वयं को परशुराम का 'दास' बताया, जिससे उन्हें चोट नहीं पहुँची और स्थिति और अधिक बिगड़ने से बच गई। विनय से क्रोध की अग्नि को शांत किया जा सकता है।

★ लक्ष्मण का मार्ग :
लक्ष्मण के तर्क और व्यंग्य ने 'आहुति' का काम किया, जिससे परशुराम का क्रोध और अधिक भड़क गया। अंततः स्थिति को राम की शीतलता और मधुर वचनों ने ही संभाला।

Scanned with OKEN Scanner

4. 'हृदय न हरषु ..... स्थापित करता है।

उत्तर 'हृदय न हरषु बिषादु कछु' श्रीराम की समदर्शिता, धीरता और स्थितप्रज्ञता को दर्शाता है। वे न तो धनुष तोड़ने की सफलता पर हर्षित थे और न ही परशुराम के क्रोध को देखकर दुखी या भयभीत।

* अन्य पात्रों से भिन्नता
- जहाँ परशुराम अत्यधिक क्रोध के वशीभूत थे।
- लक्ष्मण उत्तेजना और चपलता दिखा रहे थे।
- जनक और सभा के अन्य राजा भय और कातरता से भरे थे।

इन सबके विपरीत, श्रीराम का भावनात्मक संतुलन उन्हें एक 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में स्थापित करता है।

शब्द भंडार : पाठ एवं कविता में दिए गए समानार्थी शब्द।

विराम चिन्ह : व्याकरण परिचय
P.No. 71-80

लेखन कौशल : संवेदन पत्र
(व्याकरण परिचय- से जाँचें)

Scanned with OKEN Scanner